सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2025 - 2026

कक्षा:-6 **विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक** **पाठ:2**

मौखिक प्रश्न/ उत्तर

1. गिरगिट हरे जंगल में रहता था।
2. गिरगिट का ख्याल था कि उसे कुछ और होना चाहिए था।
3. गिरगिट को अपने सिवा हर एक से ईर्ष्या होती थी।
4. साँप बने गिरगिट ने पत्थर और काँटों की चुभन को नज़रअंदाज़ कर दिया।
5. गिरगिट को नींद लाने की पत्ती खाने की सलाह उसके दोस्त ने दी थी ।

लिखित कौशल

1. (क) गिरगिट कुछ और बनना चाहता था क्योंकि उसका ख्याल था कि हर चीज़ ,हर जीव का अपना रंग है। पर उसका अपना कोई रंग नहीं है।

(ख) गिरगिट को दो-चार कीड़े ज़्यादा निगल लेने से बदहजमी हो गई थी । नींद लाने के लिए वह कई तरह से उल्टा- सीधा हुआ परंतु उसे नींद नहीं आई। उसने कई बार रंग भी बदला , पर कोई फायदा नहीं हुआ। इसलिए उसे बेचैनी हो रही थी।

(ग) साँप बनने के बाद गिरगिट ने आसपास के माहौल में देखा कि चूहे- चमगादड़ उससे खौफ़ खाए हुए थे। सामने के पेड़ पर गिरगिट भी उससे डर कर जल्दी-जल्दी रंग बदल रहा था।

(घ) नेवला बनने के बाद गिरगिट उछल- कूद कर रहा था। एक बार वह ज़ोर से उछला तो पेड़ की टहनी पर टँग गया । टहनी का काँटा उसके जिस्म में गड़ गया। अब वह न उछल सकता था और न नीचे आ सकता था।

(ङ) कौवा बनने के बाद गिरगिट आसमान में चक्कर लगा रहा था कि नीचे खड़े कुछ लड़के गुलेल हाथ में लिए उसे निशाना बना रहे थे। उसने डरकर आँखें मूँद ली। गिरगिट बने कौवे ने डर के मारे मन- ही- मन वापस गिरगिट बनने की इच्छा की।

मूल्यपरक प्रश्न

1. जीवन में अपनी एक अलग पहचान होना बहुत आवश्यक है। व्यक्ति अपनी पहचान से ही समाज में जाना- पहचाना जाता है। उसके गुणों एवं व्यवहार से उसकी पहचान बनती है। इसलिए हमें सद्गुणों को अपनाते हुए समाज में उचित व्यवहार करना चाहिए।